जैवविविधता – मानव जीवन का आधार

Biodiversity the basis of Human Survival

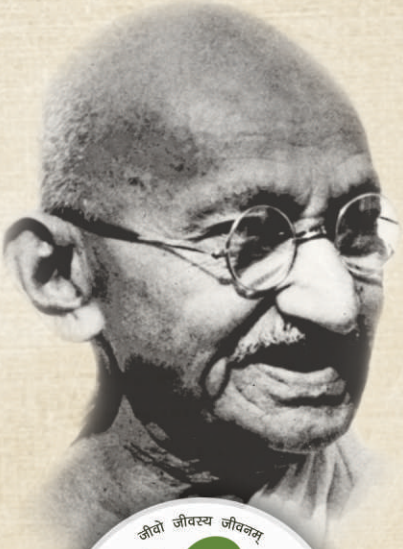

"पृथ्वी सभी मनुष्यों की ज़रुरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं"

"Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every man's greed"

Mahatma Gandhi

जीवो जीवस्य जीवनम्

MADHYA PRADESH STATE BIODIVERSITY BOARD

MADHYA PRADESH STATE BIODIVERSITY BOARD, BHOPAL

जैवविविधता

जैवविविधता प्रकृति की जैविक संपदा और समृद्धि का सम्पूर्ण स्वरूप है, जिसमें बड़े से बड़े और छोटे से छोटे यहाँ तक की आंखों से न दिखने वाले जीवाणु सब कुछ शामिल हैं।

जैवविविधता के तीन स्तरः–

1. अनुवांशिक जैवविविधता (Genetic Diversity) – यह प्रजाति के अंदर गुणसूत्रों (genes) की भिन्नता है जो प्रजाति के भीतर विविधता को जन्म देती है।

2. प्रजातीय जैवविविधता (Species Diversity) – किसी स्थान पर पाई जाने वाली प्रजातियों की विविधता।

3. पारिस्थितिकीय जैवविविधता (Eco-System Diversity) – प्रकृति में पारिस्थितिकीय तंत्रों की विविधता है। जंगल, घास के मैदान, नदियाँ, पहाड़ आदि विभिन्न विविध पारिस्थितिकीय प्रणालियाँ हैं।

अनुवांशिक जैवविविधता

जंगली मुर्गी अथवा रेड जंगल फाउल (गैलस गैलस) सभी पालतू मुर्गियों का आधार है। दुनियाँ की सभी मुर्गियों की नस्लें एवं उन्नत नस्लें जंगली मुर्गी से ही प्राप्त की गई हैं। अनुवांशिक जैवविविधता के कारण ही एक ही प्रजाति में अनेक किस्में पाई जाती हैं।

प्रजातीय जैवविविधता

मध्यप्रदेश का राज्य पशु, पक्षी, पेड़, राष्ट्रीय पशु एवं पक्षी की संकटग्रस्त प्रजाति, प्रजातीय जैवविविधता को दर्शाती है। इन राज्य एवं राष्ट्रीय चिन्हों को संरक्षित करना हमारा दायित्व है।

मध्यप्रदेश में 5 हजार से ज्यादा वानस्पतिक प्रजातियॉ हैं जिनमें से 1 हजार औषधीय हैं। असंवहनीय दोहन एवं अति उपयोग के कारण कई प्रजातियॉ नष्ट हो रही हैं। इन दुर्लभ संकटग्रस्त एवं संकटापन्न प्रजातियों का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

पारिस्थितिकीय जैवविविधता

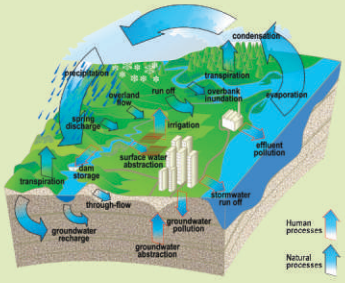

पारिस्थितिकीय सेवायें पारिस्थितिकीय तंत्र से प्राप्त विभिन्न लाभ हैं जिनके बिना मानव जीवन संभव नहीं हैं। पारिस्थितिकीय सेवाओं में भोजन, पानी, बाढ़ नियंत्रण, मृदा संरक्षण, बीमारियों की रोकथाम, प्रकृति का सौंदर्य बोधक मूल्य प्रमुख है।

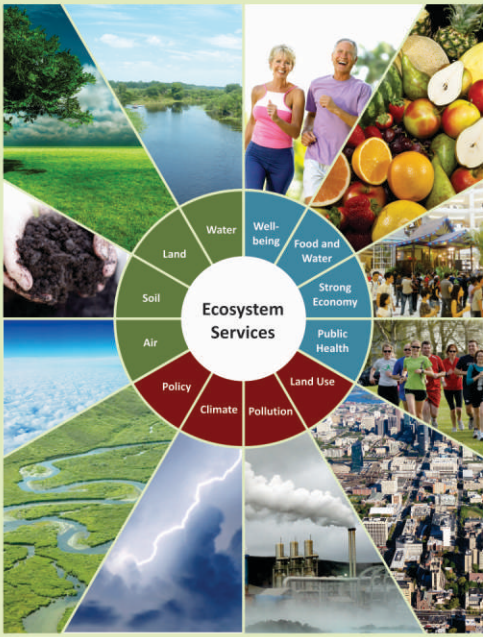

अमरकंटक (जिला–अनूपपुर) नर्मदा का उद्गम स्थान है। अमरकंटक का पठार भारत की तीन प्रमुख नदी तंत्रों–महानदी, नर्मदा एवं गंगा को विभाजित करता है। अमरकंटक से मध्यप्रदेश की तीन मुख्य नदियों नर्मदा, जोहिला एवं सोन का उद्गम होता है। अमरकंटक को बॉयोस्फीयर रिजर्व भी घोषित किया गया है।

चंबल नदी मध्य भारत की प्रमुख नदी है जो कि यमुना नदी की सहायक नदी है। इस प्रकार यह गंगा बेसिन का भाग है। चंबल नदी का उद्गम स्थल इन्दौर के समीप जानापाव की पहाड़ियॉ हैं। इस प्रकार चंबल मध्यप्रदेश की पारिस्थितिकीय प्रणाली का प्रमुख भाग है जो कि न केवल मध्यप्रदेश बल्कि राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश में पानी का स्त्रोत है। चंबल जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रजातियों जैसे गेजेंटिक डाल्फिन, घड़ियाल, इंडियन स्कीमर एवं स्वच्छ पानी के कछुओं का रहवास है।

नर्मदा नदी

नर्मदा मध्य भारत की प्रमुख नदी है जो रेवा नदी के नाम से भी जानी जाती है एवं भारतीय उप महाद्वीप की पांचवी सबसे बड़ी नदी है। नर्मदा को मध्यप्रदेश की जीवन रेखा भी कहा जाता है क्योंकि यह नदी न केवल मध्यप्रदेश बल्कि गुजरात के लिये भी पानी का सबसे बड़ा स्त्रोत है। यह नदी उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत को विभाजित करती है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के सभी प्रमुख शहर पीने के पानी की आपूर्ति के लिये नर्मदा पर निर्भर करते हैं।

सतपुड़ा

सतपुड़ा मध्य भारत की पर्वत श्रृंखला है। सतपुड़ा श्रृखंला उत्तर की ओर विन्ध्य श्रृंखला के सामान्तर चलती है। पचमढ़ी बॉयोस्फीयर रिजर्व एवं सतपुड़ा टाईगर रिजर्व सतपुड़ा श्रृंखला का भाग है। इस प्रकार सतपुड़ा के वन मध्यप्रदेश एवं गुजरात की जल सुरक्षा प्रदान करते हैं। सतपुड़ा मध्यप्रदेश की अनेक दुर्लभ संकटग्रस्त एवं संकटापन्न प्रजातियों का भी रहवास हैं।

पारिस्थितिकीय सेवा - परागण

पारिस्थितिकीय सेवाओं में कीट, पंतगों एवं तितलियों आदि से परागण सबसे महत्वपूर्ण सेवा है, जो की फूल से फल बनने की प्रकिया को पूरा करते हैं। लगभग 1 लाख प्रजातियॉ जैसे मधुमक्खी, भंवरे, तितलियॉ एवं अन्य कीट–पंतगें परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दुनियॉ में 100 फल, सब्जियों एवं कृषि फसलों की प्रजातियों में से 71 प्रजातियों का परागण मधुमक्खियों के द्वारा होता है। आम एवं सेब प्रमुख फलों की प्रजातियॉ हैं जिनका परागण मधुमक्खियों के माध्यम से होता है। इस प्रकार दुनियॉ की 90 प्रतिशत खाद्य आपूर्ति परागण की प्रकिया से ही संभव है।

जलीय जैवविविधता

महाशीर

मध्यप्रदेश की राज्य मछली महाशीर को स्वच्छ पानी का टाईगर भी कहा जाता है। एक दशक पूर्व नर्मदा नदी में बहुतायत में पाई जाने वाली इस प्रजाति की संख्या आज 4 प्रतिशत से भी कम रह गई है।

नदी के पानी में महाशीर की उपस्थिति पानी की स्वच्छता का परिचायक है। मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा बड़वाह वन मंडल में वन विभाग के सहयोग से महाशीर संरक्षण एवं संवर्धन का कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

पारिस्थितिकीय तंत्र एवं प्रजाति की पुनर्स्थापना

पन्ना टाईगर रिजर्व में वर्ष 2009 में सभी बाघ समाप्त हो गये। राज्य शासन एवं वन विभाग द्वारा बाघों की पुनर्स्थापना हेतु परियोजना तैयार कर कियान्वयन किया गया। पिछले 6 वर्षो में 7 बाघों जिनमें से 2 नर एवं 5 मादा बाघों को पन्ना में पुनः स्थापित किया गया, जिनसे 50 शावकों ने जन्म लिया। यह कार्य सफल पुनर्स्थापन एवं सफल प्रजनन का विश्वस्तरीय उदाहरण बना। बाघ संरक्षण की दिशा में पन्ना का यह मॉडल पूरे विश्व में सराहा गया । पन्ना बाघ पुनर्स्थापन योजना को भारत सरकार द्वारा भी सराहा गया है।

कृषि जैवविविधता

पूरे विश्व में धान की लगभग 40 हजार किस्में हैं। कृषि वैज्ञानिक डॉ. आर. एच. रिछारिया के अनुसार भारत में धान की लगभग 2 लाख किस्में हुआ करती थी जिनमें से लगभग 19 हजार धान की किस्मों को एकत्रित किया गया। वर्तमान में इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) द्वारा धान की 24 हजार किस्मों को संरक्षित किया गया है। मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा धान की पारंपरिक किस्मों का संरक्षण एवं संवर्धन किसानों के माध्यम से किया जा रहा है। इस क्रम में सतना जिले के पिथौराबाद ग्राम पंचायत में बोर्ड की सहायता से धान की 110 पारंपरिक किस्मों को उगाया जा रहा है एवं सामुदायिक बीज बैंक में सुरक्षित रखा जा रहा है।

पालतू पशुओं की जैवविविधता

मध्यप्रदेश में पालतू पशुओं की अनेक स्थानीय नस्लें पाई जाती हैं। इनमें से कड़कनाथ मुर्गे की नस्ल अपने काले रंग एवं विशिष्ट औषधीय गुणों एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिये जानी जाती है। यह नस्ल झाबुआ, धार एवं अलीराजपुर जिलों में पाई जाती है। इसी प्रकार मालवी, निमाड़ी एवं केनकथा गाय की स्थानीय नस्लें हैं एवं भदाभरी भैंस की स्थानीय नस्लें हैं जिसके दूध में वसा का प्रतिशत सबसे अधिक होता है।

पृष्ठभूमि

- जैवविविधता में हो रही कमी को देखते हुये ब्राजील में वर्ष 1992 में अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता सम्मेलन आयोजित किया गया। इस संधि में किये गये वादों को पूरा करने के लिये भारत सरकार द्वारा जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा जैवविविधता नियम, 2004 अधिसूचित किया गया। अधिनियम के क्रियान्वयन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण, चेन्नई, राज्य स्तर पर सभी राज्यों में राज्य जैवविविधता बोर्ड तथा स्थानीय निकाय स्तर पर जैवविविधता प्रबंधन समिति की त्रिस्तरीय संरचना बनाई गई है।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

- जैवविविधता अधिनियम, 2002 की धारा 63 में प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुये मध्यप्रदेश सरकार द्वारा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 अधिसूचित किये गये तथा अधिनियम की धारा 22 अनुसार मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड का गठन 11 अप्रैल 2005 को किया गया।

बोर्ड के उद्देश्य

1. जैवविविधता का संरक्षण,
2. जैवविविधता का संवहनीय उपयोग,
3. जैविक स्त्रोत से उद्भूत लाभों का साम्यपूर्ण विभाजन

हमारा नज़रिया

हमारा नज़रिया–प्रदेश की प्रचुर जैवविविधता के संरक्षण एवं इसके संवहनीय उपयोग तथा जैव संसाधनों से प्राप्त होने वाले लाभों के समुचित बंटवारें पर आधारित ऐसा विकास जो लोगों को सशक्त कर सके।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

प्रथम तल, किसान भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल
फोन : 0755 – 2554539, 2554549, 2764911
फॅक्स : 0755 – 2764912, ई मेल – Email : mpsbb@mp.gov.in
वेबसाईट : www.mpsbb.nic.in

CONCEPT orange